कथा सरिता

श्रेष्ठ वाणी का प्रभाव

किसी नगर में एक बूढ़ा चोर रहता था। सोलह वर्षीय उसका एक लड़का भी था। चोर जब ज़्यादा बूढ़ा हो गया तो अपने बेटे को चोरी की विद्या सिखाने लगा। कुछ ही दिनों में वह लड़का चोरी विद्या में प्रवीण हो गया। दोनों बाप बेटे आराम से जीवन व्यतीत करने लगे।

एक दिन चोर ने अपने बेटे से कहा- देखो बेटा, साधु-संतों की बात कभी नहीं सुननी चाहिए। अगर कहीं कोई महात्मा उपदेश देता हो तो अपने कानों में उंगली डालकर वहां से भाग जाना, समझे! लड़के ने कहा- हाँ बापू, समझ गया। एक दिन लड़के ने सोचा, क्यों न आज राजा के घर पर ही हाथ साफ कर दूँ। ऐसा सोचकर उधर ही चल पड़ा। थोड़ी दूर जाने के बाद उसने देखा कि रास्ते में बगल में कुछ लोग एकत्र होकर खड़े हैं। उसने एक आते हुए व्यक्ति से पूछा- उस स्थान पर इतने लोग क्यों एकत्र हुए हैं? उस आदमी ने उत्तर दिया- वहां एक महात्मा उपदेश दे रहे हैं। यह सुनकर उसका माथा ठनका। इसका उपदेश नहीं सुनूंगा ऐसा सोचकर अपने कानों में उंगली डालकर वह वहां से भाग निकला। जैसे ही वह भीड़ के निकट पहुंचा, एक पत्थर से ठोकर लगी और वह गिर गया। उस समय महात्मा जी कह रहे थे, कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए। जिसका नमक खाएं उसका कभी बुरा नहीं सोचना चाहिए। ऐसा करने वाले को भगवान सदा सुखी बनाए रखते हैं। ये दो बातें उसके कान में पड़ीं। वह झटपट उठा और कान बंद कर राजा के महल की ओर चल दिया। वहां पहुंचकर जैसे ही अंदर जाना चाहा कि उसे वहां बैठे पहरेदार ने टोका-अरे कहां जाते हो? तुम कौन हो? उसे महात्मा का उपदेश याद आया, 'झूठ नहीं बोलना चाहिए।' चोर ने सोचा, आज सच ही बोल कर देखें। उसने उत्तर दिया- मैं चोर हूँ, चोरी करने जा रहा हूँ। पहरेदार ने कहा- अच्छा जाओ। उसने सोचा राजमहल का नौकर होगा। मज़ाक कर रहा है। चोर सच बोलकर राजमहल में प्रवेश कर गया। एक कमरे में घुसा। वहां ढ़ेर सारा पैसा तथा जेवर देख उसका मन खुशी से भर गया। एक थैले में सब धन भर लिया और दूसरे कमरे में घुसा। वो रसोई घर था। अनेक प्रकार का भोजन वहां रखा था। वह खाना खाने लगा। खाना खाने के बाद वह थैला उठाकर चलने लगा कि तभी फिर महात्मा का उपदेश याद आया, 'जिसका नमक खाओ, उसका बुरा मत सोचो।' उसने अपने मन में कहा, खाना खाया उसमें नमक भी था। इसका बुरा नहीं सोचना चाहिए। इतना सोचकर, थैला वहीं रख वह वापस चल पड़ा। पहरेदार ने फिर पूछा- क्या हुआ, चोरी क्यों नहीं की? चोर ने कहा- देखिए जिसका नमक खाया है, उसका बुरा नहीं सोचना चाहिए। मैंने राजा का नमक खाया है, इसलिए चोरी का माल नहीं लाया। वहीं रसोई घर में छोड़ आया। इतना कहकर वह वहां से चल पड़ा। उधर रसोइए ने शोर मचाया- पकड़ों चोर भागा जा रहा है। पहरेदार ने चोर को पकड़कर दरबार में उपस्थित किया। राजा के पूछने पर उसने बताया कि एक महात्मा के द्वारा दिए गए उपदेश के मुताबिक मैंने पहरेदार के पूछने पर अपने को चोर बताया क्योंकि मैं चोरी करने आया था। आपका धन चुराया लेकिन आपका खाना भी खाया, जिसमें नमक मिला था। इसीलिए आपके प्रति बुरा व्यवहार नहीं किया और धन छोड़कर भागा। उसके उत्तर पर राजा बहुत खुश हुआ और उसे अपने दरबार में नौकरी दे दी। वह दो-चार दिन घर नहीं गया तो उसके पिता को चिंता हुई कि बेटा पकड़ लिया गया- लेकिन चार दिन के बाद लड़का आया तो बाप अचंभित रह गया अपने बेटे को अच्छे वस्त्रों में देखकर! लड़का बोला- बापू जी, आप तो कहते थे कि किसी साधु संत की बात मत सुनो। लेकिन मैंने एक महात्मा के दो शब्द सुने और उसी के मुताबिक काम किया तो देखिए सच्चाई का फल! सच्चे संत की वाणी में अमृत बरसता है, आवश्यकता है बस आचरण में उतारने की है..।

अच्छाइयों को याद करें

एक देवरानी और जेठानी में किसी बात पर ज़ोरदार बहस हुई और बात इतनी बढ़ गई कि दोनों ने एक दूसरे का मुँह तक न देखने की कसम खा ली और अपने-अपने कमरे में जाकर दरवाज़ा बंद कर लिया।

परंतु थोड़ी देर बाद जेठानी के कमरे के दरवाज़े पर खट-खट हुई। जेठानी तनिक ऊँची आवाज़ में बोली कौन है, बाहर से आवाज़ आई दीदी मैं! जेठानी ने ज़ोर से दरवाज़ा खोला और बोली, अभी तो बड़ी कसमें खा कर गई थी, अब यहाँ क्यों आई हो? देवरानी ने कहा- दीदी, सोच कर तो वही गई थी, परंतु माँ की कही एक बात याद आ गई कि जब कभी किसी से कुछ कहा सुनी हो जाए तो उसकी अच्छाइयों को याद करो और मैंने भी वही किया और मुझे आपका दिया हुआ प्यार ही प्यार याद आया और मैं आपके लिए चाय ले कर आ गई।

बस फिर क्या था... दोनों रोते रोते, एक दूसरे के गले लग गईं और साथ बैठ कर चाय पीने लगीं। जीवन में क्रोध को क्रोध से नहीं जीता जा सकता, बोध से जीता जा सकता है। अग्नि अग्नि से नहीं बुझती जल से बुझती है। समझदार व्यक्ति बड़ी से बड़ी बिगड़ती स्थितियों को दो शब्द प्रेम के बोलकर संभाल लेते हैं। हर स्थिति में संयम और बड़ा दिल रखना ही श्रेष्ठ है।

बस... एक का भरोसा

एक राजा बहुत दिनों से पुत्र की प्राप्ती के लिये आशा लगाये बैठा था, पर पुत्र नहीं हुआ। उसके सलाहकारों ने तांत्रिकों से सहयोग की बात बताई। सुझाव मिला कि किसी बच्चे की बलि दे दी जाये तो पुत्र प्राप्ती हो जायेगी।

राजा ने राज्य में ये बात फैलाई कि जो अपना बच्चा देगा उसे बहुत सारे धन दिये जायेंगे। एक परिवार में कई बच्चे थे, गरीबी भी थी।

एक ऐसा बच्चा भी था जो ईश्वर पर आस्था रखता था तथा सन्तों के संग सत्संग में ज़्यादा समय देता था। परिवार को लगा कि इसे राजा को दे दिया जाये। क्योंकि ये कुछ काम भी नहीं करता है, हमारे किसी काम का भी नहीं। इससे राजा प्रसन्न होकर बहुत सारा धन देगा। ऐसा ही किया गया, बच्चा राजा को दे दिया गया। राजा के तांत्रिकों द्वारा बच्चे की बलि की तैयारी हो गई। राजा को भी बुलाया गया। बच्चे से पूछा गया कि तुम्हारी आखिरी इच्छा क्या है? क्योंकि आज तुम्हारा जीवन का अन्तिम दिन है। बच्चे ने कहा कि ठीक है मेरे लिये रेत मगा दिया जाये, रेत आ गया।

बच्चे ने रेत से चार ढ़ेर बनाये, एक-एक करके तीन रेत के ढ़ेर को तोड़ दिया और चौथे के सामने हाथ जोड़कर बैठ गया और कहा कि अब जो करना है करें। ये सब देखकर तांत्रिक डर गये, बोले कि ये तुमने क्या किया है पहले बताओ। राजा ने भी पूछा तो बच्चे ने कहा कि पहली ढ़ेरी मेरे माता पिता की है। मेरी रक्षा करना उनका कर्त्तव्य था, पर उन्होंने पैसे के लिये मुझे बेच दिया। इसलिये मैंने ये ढ़ेरी तोड़ी, दूसरा मेरे सगे-सम्बन्धियों का था। उन्होंने भी मेरे माता-पिता को नहीं समझाया। तीसरा आपका है राजन, क्योंकि राज्य के सभी इंसानों की रक्षा करना राजा का ही काम होता है। पर राजा ही मेरी बलि देना चाह रहा है तो ये ढ़ेरी भी मैंने तोड़ दी। अब सिर्फ मेरे सतगुरू और ईश्वर पर मुझे भरोसा है, इसलिये ये एक ढ़ेरी मैंने छोड़ दी है। राजा ने सोचा कि पता नहीं बच्चे की बलि के बाद भी पुत्र प्राप्त हो या न हो! क्यों ना इस बच्चे को ही अपना पुत्र बना लें, इतना समझदार और ईश्वर भक्त बच्चा है। इससे अच्छा बच्चा कहाँ मिलेगा। राजा ने उस बच्चे को अपना बेटा बना लिया और राजकुमार घोषित कर दिया। सच ही है... जो ईश्वर पर यकीन रखते हैं, उनका बाल भी बाँका नहीं होता है। 0हर मुश्किल में एक का ही जो आसरा लेते हैं, उनका कहीं से किसी प्रकार का कोई अहित नहीं होता है।

दिबियापुर-उ.प्र.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान नगरपालिकाध्यक्ष अरविंद पोरवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सरिता तथा ब्र.कु. श्याम।

नेपाल-धनुषाधाम। ए.पी.एफ. कैम्प में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं कार्यक्रम के आयोजन पश्चात् चित्र में ए.पी.एफ. पुलिस इंस्पेक्टर शुभम पोखरेक व अन्य पुलिसकर्मियों के साथ ब्र.कु. गुलाब तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

दिल्ली। 'खेलो इंडिया स्कूल गेम्स' के समापन अवसर पर जी.ओ.आई. मिनिस्ट्री ऑफ यूथ अफेयर्स एंड सपोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया द्वारा ब्र.कु. डॉ. जगबीर,स्पोर्ट्स विंग,ब्रह्माकुमारीज़,माउण्ट आबू को आमंत्रित किये जाने पर वे बैडमिंटन मेडल विनर्स के साथ दिखाई दे रहे हैं।

मण्डी डबवाली-हरियाणा। दो दिवसीय 'अलविदा डायबिटीज़ शिविर' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. डॉ. श्रीमंत साहू,माउण्ट आबू तथा गणमान्य अतिथिगण।

दिल्ली-आर.के. पुरम। ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् जे.ई. राहुल जी,एस.डी.एम.सी. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता।

पठानकोट-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शहर में निकाली गई पल्स पोलियो रैली के दौरान ब्र.कु. सत्या बहन ने बच्चों को पोलियो ड्रॉप पिलाया।